International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

रामराज्य की शासन व्यवस्थाः आदर्श नेतृत्व और जनकल्याण की अवधारणा

डॉ. नवीन
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, हिन्दू कॉलेज, सोनीपत

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य रामायण के आलोक में रामराज्य की शासन व्यवस्था का समीक्षात्मक अध्ययन करना है, जिसमें आदर्श नेतृत्व, न्यायप्रियता और जनकल्याण की अवधारणा को प्रमुखता से विश्लेषित किया गया है। रामराज्य को भारतीय राजनीतिक चिंतन में आदर्श शासन प्रणाली के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि भगवान राम का शासन धर्म, सत्य, करुणा और समानता के सिद्धांतों पर आधारित था। राम स्वयं को प्रजा का सेवक मानते थे और व्यक्तिगत सुख की अपेक्षा लोककल्याण को प्राथमिकता देते थे। शोध में यह भी दर्शाया गया है कि रामराज्य में कानून सभी के लिए समान था तथा राजा और सामान्य नागरिक में कोई भेद नहीं किया जाता था। सामाजिक समरसता, आर्थिक समृद्धि और नारी सम्मान रामराज्य की प्रमुख विशेषताएँ थीं। किसी भी प्रकार का शोषण, भ्रष्टाचार और अन्याय वहाँ नहीं था। इस अध्ययन के माध्यम से आधुनिक शासन व्यवस्था के लिए रामराज्य से प्रेरणा लेने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। वर्तमान समय में नैतिक नेतृत्व, पारदर्शी प्रशासन और कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को सुदृढ़ करने हेतु रामराज्य के आदर्श अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होते हैं।

मुख्य शब्द : रामराज्य, आदर्श शासन व्यवस्था, जनकल्याण, नैतिक नेतृत्व, न्यायप्रियता, धर्म आधारित प्रशासन, सामाजिक समरसता, रामायण, समानता, लोकसेवा।

आदिकवि वाल्मीकि रामायण में रामचरित के माध्यम से तत्कालीन संस्कृति के एक सुन्दर तथा आदर्श शासन प्रबन्ध, योग्य तथा आदर्श राजा तथा प्रजाहित में संलग्न एक आदर्श राज्य का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। रामायण में रामराज्य चित्रण युग–युगान्तर के लिए उदाहरण बना है और आज तक 'रामराज्य' शब्द से सर्वोत्तम शासन–प्रणाली अभिव्यंजित होती है। राम्रराज्य में, शासन की कल्पना एक निस्वार्थ, बुद्धिमान और दयालु राजा के रूप में की गई है जो धर्म व नीति के साथ सभी नागरिकों के कल्याण के लिए काम करता है रामराज्य की अवधारणा अक्सर समाज के सभी वर्गों के बीच ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, समानता और सद्भाव

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

जैसे सिद्धांतों को आत्मसात किये हुए हैं। रामराज्य में राज्य का स्वरूप राजतन्त्र था, प्रजातन्त्र नहीं। किन्तु उस राजतन्त्र में प्रजा की रुचि एवं विचारों का जितना ध्यान एवं आदर था, वह प्रजातन्त्र रूप में प्रख्यात आधुनिक किसी भी देश में प्राप्त नहीं होता। रामायण में प्रशासन का अध्यक्ष राजा अवश्य था किन्तु 'लोक' अथवा 'प्रजा' का स्थान भी समकक्ष ही था।

सर्वे नराश्च नार्यश्च धर्मशीलाः सुसंयताः।

मुदिताः शीलवृत्ताभ्यां महर्षय इवामलाः।।

श्रीराम के राज्य में सारी प्रजा सत्यपरायण थी झूठ से सदा दूर रहती थी। सब लोग शुभ लक्षणों युक्त थे और सब लोग धर्मपरायण होते थे। राम के राज्य में जो अच्छाई है, वे शासक के चरित्र व कुशल नेतृत्व के कारण है।

राजा अथवा राजतन्त्र का प्रारम्भ

पृथ्वी पर राज्य अथवा राजतन्त्र प्रारम्भ कैसे हुआ? इस सम्बन्ध में रामायण में एक रोचक कथा प्राप्त होती है। बहुत प्राचीन काल में कृतयुग के समय सारी प्रजाएँ राजारहित थी, केवल देवों के राजा इन्द्र थे। तब समस्त प्रजाओं ने जाकर ब्रह्मा से कहा– 'आपने देवों के राजा तो नियुक्त कर दिए। हमें भी कोई श्रेष्ठ राजा दीजिए, जिसके प्रति पूजा एवं सम्मान भावना रखकर हम भी पापरहित होकर जीवनयापन करें। हमारा निश्चय है कि अब हम राजा के बिना नहीं रहेंगे।' यह सुनकर ब्रह्मा ने इन्द्र सहित सभी लोकपालों को बुलाकर उनसे उनके तेज के एक–एक अं ा को देने की आज्ञा दी। लोकपालों ने इस आज्ञा का पालन किया। उसी समय ब्रह्मा की छींक से क्षुप नामक राजा उत्पन्न हुआ। ब्रह्मा ने क्षुप को सभी लोकपालों के तेज से समन्वित करके उसे पृथिवी पर प्रजाओं का राजा बना दिया। राजा क्षुप ने इन्द्र के तेजांश से पृथिवी का शासन किया, वरुण के तेजां ा से प्रजाओं का पोषण किया, कुबेर के तेजांश से प्रजाओं को धनसम्पन्न किया और यमराज तेजांश से अपराधी प्रजाओं को दण्डित किया–

ततौ ददौ नृपं तासां प्रजानामीश्वरं क्षुपम्।

तत्रेन्द्रेण च भागेन महीमाज्ञापयन्नृपः।।

तत्रैन्द्रेण नरश्रेष्ठ भागेन रघुनन्दन।।

यह सम्पूर्ण कथा मुख्यतः यही निर्देश करती है कि समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए पृथिवी पर प्रारम्भिक काल से ही राजा की आवश्यकता रही है।

आदर्श राजा

राजा के बिना राज्य नहीं होता, होने पर नष्ट हो जाता है। संसार में गुणवान राजा ही आदरयोग्य होता है। पृथ्वी भी सदाचारी तथा पराक्रमी व्यक्ति को ही राजा रूप में पाने की कामना करती है

तमेंवंवृत्त सम्पन्नमप्रधृष्यपराक्रमम्।
लोकनाथोपमं नाथमकामयत मेदिनी।।

चौदह विद्याओं में सुशिक्षित तथा नीति अनुगामी राजा ही चिरकाल तक भाासन कर पाता है। राजा ही राज्य में सत्य एवं धर्म का प्रवर्तक होता है। जिस प्रकार विभिन्न लोकपाल इस लोक का पालन करते हैं, उसी प्रकार राजा इस पृथिवी का पालन करता है। राजा विभिन्न लोकपालों के चतुर्थांशों से युक्त होता है।

इन्द्रस्यैव चतुर्भागः प्रजा रक्षति राघव।
राजा तस्माद् वरान् भोगान् रम्यान् भुङ्क्ते नमस्कृतः।।

राजा में पाँच देवों का स्वरूप गुण के रूप में समाहित होता है– अग्नि की उष्णता (प्रताप), इन्द्र का पराक्रम, सोम की सौम्यता, यम का दण्ड तथा वरुण की प्रसन्नता। प्रत्येक लोकपाल में तो उसका ही एक ही निजी गुण होता है, किन्तु श्रेष्ठ राजा में सारे ही गुष्ठ होने के कारण वह लोकपालों में भी श्रेश्ठ होता है–

'यमो वैश्रूषणः शक्रो वरुणश्च महाबलः।
विशिष्यन्ते नरेन्द्रेण वृत्तेन महता ततः।।

रामायण के प्रारम्भ में ही वाल्मीकि ने चरितनायक के लिए जिन–जिन गुणों की आकांक्षा की है, वस्तुतः एक राजा से उन सारे गुणों की अपेक्षा की जाती है। राजा न केवल शरीर से सुदर्शन एवं प्रभावशाली होना चाहिए, अपितु धर्मज्ञ, पवित्र आचरण, जितेन्द्रिय, सारे प्राणियों का हिताकांक्षी जितक्रोध एवं पराक्रमी भी होना चाहिए–

प्रजापतिसमः श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता।।

अयोध्याकाण्ड के द्वितीय सर्ग में राम को ही युवराज बनाए जाने का औचित्य प्रतिपादित करते हुए राजोपयुक्त गुणों की एक विस्तृत सूची ही प्रस्तुत कर दी है

धर्मज्ञः सत्यसंधश्च शीलवाननसूयकः।
क्षान्तः सान्त्वयिता श्लक्ष्णः कृतज्ञो विजितेन्द्रियः।।
मृदुश्च स्थिरचित्तश्च सदा भव्योऽनसूयकः।
प्रियवादी च भूतानां सत्यवादी च राघवः।।

मन्त्रियों के पराम र्शपूर्वक राम को युवराज बनाने का निश्चय करके दशरथ ने राम को बुलवाया और उनको हितकारक परामर्श दिया– 'हे पुत्र! विनयी एवं जितेन्द्रिय रहना। काम–क्रोध से उत्पन्न दुर्व्यसनों को त्यागना। गुप्तचरों से पता करके तथा प्रत्यक्षतया देख कर न्याय में सर्वदा तत्पर रहना। राज्याधिकारियों और प्रजाननों को प्रसन्न रखते हुए कोष और शस्त्रागार को सदैव भरा रखना। तभी प्रजाएँ अनुरक्त रहेंगी।'

कामक्रोधसमुत्थानि त्यजस्व व्यसनानि च।
परोक्षया वर्तमानो वृत्त्या प्रत्यक्षया तथा।।
इष्टानुरक्तप्रकृतिर्यः पालयति मेदिनीम्।
तस्य नन्दन्ति मित्राणि लब्ध्वामृतमिवागराः।।

ये सारे हितवचन राजा के गुणों को उजागर करते हैं। श्रीराम में राजा के ये समस्त गुण निहित थे अतः वे एक आदर्श राजा रहे है। श्री राम समाज के लिए एक आदर्श को प्रस्तुत करते हैं। राम एक पुत्र, पति, भाई, मित्र और शत्रु के प्रति क्या भाव हो, के बारे में भी बताते हैं। शत्रु को लेकर भी 'रामचरितमानस' की एक चौपाई आती है, जिसमें राम कहते हैं–

काजु हमार तासु हित होई। रिपु सन करेहु बतकही सोई।।

अर्थात् शत्रु से उतनी बात करना, जिससे हमारा हित हो जाए और उसका भी कल्याण हो, अतः शत्रु पर भी करुणा करने वाले हैं श्री राम राजा स्वयं धर्म का पालक, प्रजाओं का सेवक एवं सबका मार्गदर्शक गुरु होता है। राजा इन्द्र का चतुर्थ भाग होता है। इसलिए वह सबका शासक एवं वन्दनीय होता है। प्रजापालन रूप कठोर कार्य करने के कारण ही वह रमणीय भोगों का उपभोग करता है। किष्किन्धाकाण्ड में राम कहते है कि राजा लोग दुर्लभ, जीवन और लौकिक अभ्युदय देने वाले होते हैं। अतः उनकी हिंसा की बात तो दूर रही उनकी न

तो निन्दा करनी चाहिए न उनके ऊपर किसी तरह का आक्षेप करना चाहिए और न उनके प्रति अप्रिय वचन ही बोलना चाहिए राजा वास्तव में देवता होता है, जो मनुष्य रूप में धरती पर विचरण करता है–

तान् न हिंस्यान्न चाक्रोशन्नाक्षिपेन्नाप्रियं वदेत्।
देवा मानुषरूपेण चरन्तयेते महीतले।।

अतः श्रीराम आदर्श राजा मानवीय मूल्यों के प्रतीक एवं जीवन की अन्य भूमिकाओं में आदर्श रूप है।

राम राज्य की अवधारणा

एक सुशासित राज्य को रामराज्य कहा जाता है। जहाँ सभी को न्याय मिलता है, सभी समृद्ध हैं और सभी प्रसन्न हैं। जब समाज में स्वास्थ्य, आनन्द समृदि और न्याय हो और लोग भौतिक वस्तुओं या घृणा में फंसने के बजाय जीवन के उच्च, सत्य को पाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हों, वही रामराज्य है। इस प्रकार का समाज सदा ही लोगों का सपना रहा है। रामराज्य में जिस प्रकार के समाज का विवरण मिलता है वह समाज हर प्रकार से समृद्ध व आनन्दमयी है–

राघवे शासति भुवं लोकनाथे रमापतौ।
वसुधा सस्यसम्पन्ना फलवन्तश्च भूरुहाः।।

श्री रघुनाथजी के राज्य में समस्त पुरुष धर्मपरायण थे, स्त्रियाँ पति–सेवा में तत्पर रहती थीं और किसी को भी अपने पुत्र का मरण नहीं देखना पड़ता था। उत्तरकाण्ड में रामराज्य वर्णन के माध्यम से कवि ने एक आदर्श समाज के स्वरूप का वर्णन किया है। रामराज्य में जो अच्छाई है, वे शासक के चरित्र व कुशल नेतृत्व के कारण हैं। वातावरण का प्रभाव जीव जगत् पर पड़ता है, ऐसा वर्णन अनेक कवि करते आए हैं। रामराज्य में मनुष्य अपने वर्ण व आश्रम के अनुकूल आचरण करते हुए वैदिक मार्ग का पालन करते थे। कोई किसी से बैर या ईर्ष्या नहीं करता था। इस राज्य में सभी प्रकार की विषमताओं का अभाव था। सभी नागरिक भय, शोक, रोग, तापादि से मुक्त थे–

दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहिं काहुहिं व्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीति। चलहिं स्वधर्म निरतश्रुत नीति।।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

रामराज्य में धर्म अपने चारों चरणों से स्थापित था। पाप कर्मों का नाम तक नहीं था। इस राज्य में न कोई अल्पायु में मरता था और न कोई रोगी या दरिद्र था। सब नागरिक स्वस्थ व निरोग थे। न कोई अज्ञानी था और न कोई शुभ लक्षणों से हीन। सभी व्यक्ति धर्मपरायण, पुण्यात्मा, चतुर, गुणवान, गुणज्ञ, ज्ञानवान, उदार, परोपकारी व कृतज्ञ थे। दम्भ व कपट से रहित यह समाज कितना सुखद होगा—

तस्मिन पुरवरे दृष्टा धर्मात्मानो बहुश्रुताः।
नरास्तुष्टा धनैः स्वैः स्वैरलुब्धाः सत्यवादिनः।।

अपार सम्पदा के स्वामी रामराज्य के नागरिक ब्राह्मण भक्ति व एक पत्नीव्रत को अपना धर्म मानते थे। नारियाँ भी पतिव्रता थी। नर—नारियों के स्वभाव में कहीं भी दूषण नहीं दिखाई देता था। इस वातावरण का प्रभाव पशु—पक्षियों में भी स्पष्ट दिखाई देता था। वे अपने स्वभावगत बैर को भूलकर एक साथ विचरण करते थे। गायें दुधारू थीं। खेत धन—धान्य से परिपूर्ण थे पक्षियों के कलरव व भ्रमरों के गुंजार से युक्त तथा फूल से लदे हुए वृक्ष वातावरण को सुखद बनाते थे। नदियाँ शीतल, निर्मल व सुस्वाद जल से परिपूरित थीं। सरोवर कमलों से आच्छादित थे। समय पर वर्षा होती थी। पर्वत प्राकृतिक सम्पदा से युक्त थे। इस वातावरण का ही प्रभाव था—

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन।
रहहिं एक संग गज पंचानन।।
खग मृग सहज बयरु बिसराई।
सबन्हि पस्पर प्रीति बढाई।।

यह वातावरण राजा राम के कारण बना है जो यज्ञ में विश्वास करते हैं। उन्होंने अनेक अश्वमेघ यज्ञ किए। वे ब्राह्मणों का मान—सम्मान व दान देने वाले हैं। राम गुणातीत है, वे ऐश्वर्य में इन्द्र के समान है। श्रीराम के यज्ञ में आए हुए तपस्वी मुनि कहते थे कि ऐसा यज्ञ तो पहले इन्द्र, चन्द्रमा, यम और वरुण के यहाँ भी नहीं देखा गया—

ईदृशं राजसिंहस्य यज्ञप्रवरमुत्तमम्।
नान्यः शब्दोऽभवत् तत्र हयमेधे महात्मनः।।
छन्दतो देहि देहीति यावत् तुष्यन्ति याचकाः।।

यह रामराज्य का ही प्रभाव है कि प्रजा राजा से प्रसन्न है। घर–घर में पुराणों व रामकथा का परायण होता है। सभी वर्ग के व्यक्ति सदाचारी हैं। नर–नारी परस्पर प्रेम व सौहार्द से रहते हैं। नीतिज्ञ शासक राम के राज्य में सुन्दर राजमार्ग है। गगनचुम्बी, सुन्दर भवन है। इन भवनों में स्फटिक के आँगन हैं, जिनमें पालित पक्षियों की अधिकता है। सुन्दर व विस्तृत बाजार है, सरयू के तट निर्मल व सुन्दर हैं, जिसके किनारों पर देवमन्दिर बने हुए हैं, जिनमें विरक्त, ज्ञानी, मुनि, संन्यासीगण निवास करते हैं–

इद्ं राज्यं च सकलं जीवितंच हदि स्थितम्।
सर्वमेतद् द्विजार्थं मे सत्यमेतद् ब्रवीभि वः।।

रामराज्य में अविद्या रूपी रात्रि का नाश हो गया है। पाप रूपी उल्लू छिप गए हैं। काम, क्रोध रूपी कुमुद बन्द हो गए हैं। बन्धन कारक कर्म, गुण, काल, स्वभाव समाप्त हो गए हैं' मान, मद, मोह, मत्सर कहीं दिखाई नहीं देते। सभी व्यक्ति सुख, सन्तोष, वैराग्य व विवेक से मुक्त है। त्रेतायुग से सत्युग के समस्त सुख राम की प्रजा भोग रही है। यह राजा राम का ही प्रभाव है।

गीतावली व दोहावली में भी तुलसीदास ने अत्यन्त संक्षेप में रामराज्य का वर्णन किया है। राम के राज्य में सभी पुरुष पुण्यवान व भाग्यशाली थे। सभी अपने–अपने वर्णाश्रम धर्म में तत्पर मन, वचन और वेश से हंस के समान स्वच्छ व पवित्र थे–

नारि नर तेहि समय सुकृती, भरे भाग सुगाल।
बरन–आश्रम धरमरत, मन वचन वेष मराल।।

राम के राजा होने से सब लोगों को सब प्रकार के सुख प्राप्त हो रहे हैं। सब प्रकार के पाप, क्लेश, कुलक्षण, कपट, कुमार्ग, कुचाल नष्ट हो गये तथा दरिद्रता, दारुण–दोष, दंभ, दुष्काल आदि का नाम मिट गया है। राजा राम सावधान होकर नीति का ध्यान रखते हुए प्रजा का पालन करते हैं।

नयश्च विनयश्चोभौ निग्रहानुग्रहावपि।
राजवृत्तिरसंकीर्णा न नृपाः कामवृत्तयः।।

श्रीराम प्रजा को सुख देने में चन्द्रमा की और क्षमारूपी गुण में पृथ्वी की समानता करते हैं। बुद्धि में बृहस्पति और बल–पराक्रम में साक्षात् शचीपति इन्द्र के समान हैं–

प्रजासुखत्वे चन्द्रस्य वसुधायाः क्षमागुणैः।

बुद्धया बृहस्पतेस्तुल्यो वीर्ये साक्षाच्छचीपतेः।।

सम्पूर्ण लोकों को आनन्दित करने वाले ये श्रीराम शूरता, वीरता और पराक्रम आदि के द्वारा सदा प्रजा का पालन करने में लगे रहते हैं।

उनकी इन्द्रियाँ राग आदि दोषों से दूषित नहीं होती है। नगर के मनुष्यों पर संकट आने पर वे बहुत दुःखी हो जाते हैं और उन सबके घरों में सब प्रकार के उत्सव होने पर उन्हें पिता की भाँति प्रसन्नता होती है। अतः श्रीराम राज्य में हर प्रकार से समृद्धि व आनन्द था।

प्रजारक्षण एवं न्याय

संसार में गुणवान् राजा ही आदर योग्य हुआ करता है। पृथ्वी भी सदाचारी तथा पराक्रमी व्यक्ति को ही राजा रूप में पाने की कामना करती है। राजा का चरम एवं परम कर्त्तव्य प्रजा की रक्षा और पालन करना है। वर्णाश्रम की मर्यादा बनाए रखकर, दुष्टों का दमन करके तथा न्याय करके राजा प्रजापालक कहलाता है। सदैव जागरूक रहकर प्रजा का पुत्रवत रक्षण करने वाले राजा ही यशस्वी हुए–

मयाप्याचरितं पूर्वैः पन्थानमनुगच्छता।

प्रजा नित्यमनिद्रेण यथाशक्त्यभिरक्षिताः।।

प्रजा की रक्षा करने के लिए और चातुर्वर्ण्य के हित के लिए राजा का नृशंस आचरण भी युक्तियुक्त है। ताटका वध के लिए प्रेरित करते हुए विश्वामित्र ने राम को यही शिक्षा दी थी–

नृशंसमनृशंसं वा प्रजारक्षणकारणात्।

पातकं वा सदोषं वा कर्तव्यं रक्षता सदा।।

धर्मपूर्वक प्रजापालन करने के कारण राजा अपनी प्रजा के वेदाध्ययन, तपस्या और शुभ कर्मों के पुण्य का छठा भाग ग्रहण करता है। अतः षडंश ग्रहण करने वाले राजा का प्रथम कर्त्तव्य की मर्यादायुक्त रक्षा है। राजा राम ने हमेशा अपनी प्रजा का रक्षण व हित किया व न्याय का भी हमेशा उचित प्रयोग किया–

इदं राज्यं च सकलं जीवितं च हृदि स्थितम्।

सर्वमेतद् द्विजार्थं में सत्यमेतद् ब्रवीमि वः।।

अव्यकाण्ड में विभिन्न मुनिगण समवेत होकर राम से प्रार्थना करते हैं कि वे राक्षसों से उनकी रक्षा करें। क्योंकि जो राजा प्रजा की रक्षा करता हुआ पुत्रवत् उनका पालन करता है। वह शा वत यश प्राप्त करता और अन्त में ब्रह्मलोक जाकर वहाँ भी विशेष सम्मान का भागी बनता है–

युंजानः स्वानिव प्राणान् प्राणैरिष्टान सुतानिव।
नित्ययुक्तः सदा रक्षन् सर्वान् विषयवासिनः।।
प्राप्नोति शाश्वतीं राम कीर्ति स बहुवार्षिकीम्।
ब्रह्मणः स्थानमासाद्य तत्र चापि महीयते।।

राजा राम ने प्रजापालन अथवा प्रजानुरञ्जन के इसी कठोर व्रत का परिपालन करने के लिए गर्भवती सीता को निष्पाप मानते हुए भी निर्वासित कर दिया था–

रामोऽपि सीतारहितः परात्मा,
विज्ञानदृक्केवल आदिदेवः।
सन्त्यज्य भोगान् खिलान्विरक्तो,
मुनि व्रतोऽभून्मुनि सेविताङ्घ्रिः।।

श्री राम के प्रजापालन का एक और पक्ष था– अविलम्ब किसी भी कार्यार्थी की पीड़ा–कथा सुनकर उसका निराकरण कर सकना। रामराज्य तो एक ऐसा आदर्श राज्य था, जहाँ कभी प्रजा को पीड़ा होती ही नहीं थी, सभी सुखी व समृद्ध थे।

शशास रामो धर्मेण राज्यं परमधर्मवित्।
कथा संस्थापयामास सर्वलोकमलापहाम्।।

राज्य की रक्षा एवं पालन के लिए राजा सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव तथा समाश्रय– इन छह युक्तियों का आश्रय लिया करता है। श्रीराम ने भी हमे ाा इन्हीं के आश्रित होकर प्रजापालन किया। साम–दान–दण्ड–भेद इन चार उपायों का पालन करते हुए रामराज्य हमेशा उन्नतिशील रहा।

न्याय व दण्ड के प्रति श्रीराम हमेशा सतर्क रहे। रामराज्य में सर्वथा निष्पक्ष न्याय को प्रश्रय दिया गया। श्रीराम के अनुसार राजा स्वेच्छाचारितापूर्वक या मदान्धतापूर्वक विवाद का निर्णय न दे। वह स्वयं संयमित हो तो अपराध की अच्छी तरह से जाँच करवा लें, तब शास्त्रीय

विधि से दण्ड दें। उत्तरकाण्ड में अपने दरबार में न्याय के लिए आए कुत्ते के साथ भी राम निष्पक्ष व उचित न्याय करते हैं तभी तो रामराज्य में जीव, व्यक्ति, प्रकृति सभी आनन्दमयी व सम्पन्न थी–

नीत्या सुनीतया राजा धर्मं रक्षति रक्षिता।
यदा न पालयेद् राजा क्षिप्रं नश्यन्ति वै प्रजाः।।

अतः श्रीराम ने हमेशा न्याय करते समय मन को संयम एवं चित्त को स्थिर रखकर कार्य किया। संयमित मन वाला राजा ही समुचित न्याय कर सकता है। रामराज्य में प्रजारक्षण व न्याय की व्यवस्था सदैव सुव्यवस्थित थी। मॉरिशस के रामायण केन्द्र के कार्यकारी अध्यक्ष राजेन्द्र अरुणजी रामराज्य को परिभाषित करते हैं– 'राजा के रूप में राम का चरित्र सद से प्रेरक है। जनकल्याण की दृष्टि से रामराज्य एक आदर्श और सम्पूर्ण व्यवस्था के रूप में प्रसिद्ध है। गांधी ने भी आधुनिक भारत के लिए ऐसी ही शासन व्यवस्था की कामना की थी, जिसे उन्होंने 'रामराज्य' कहा था, रामराज्य रामजी के चरित्र में राजशाही और लोकतंत्र का अनोखा संगम है।'

रामराज्य का संगठित समाज

प्रभु राम एक संगठित समाज की रचना की बात करते हैं। राष्ट्र एवं समाज एक ही है, जिसका आधार व्यक्ति–व्यक्ति के बीच परस्पर बंधुत्व का भाव है। समाज समरस भाव से चले, इस विचार को राम ने सदैव अपने आचरण में रखा। राम ने इस धरा पर धर्म के रक्षण हेतु समाज के सभी वर्गों को संगठित कर रावण जैसे अधर्मी को समूल नष्ट कर दिया तथा सामाजिक जीवन में कई आदर्शों का निर्माण भी किया।

देवी अहल्या अकारण ही तमाम कष्टों को भोग रही थी। जो अपराध किया नहीं, उसका दंड नियति सम्मत नहीं है। प्रभु राम जी ने उनका उद्धार किया–

राघवौ तु तदा तस्याः पादौ जगृहतुर्मुदा।
स्मरन्ती गौतमवचः प्रतिजग्राह सा हि तौ।।

माता शबरी के जूठे बेर खाकर उन्हें माता के समान ही सम्मान दिया।

तामुवाच ततो रामः शबरीं संशितव्रताम्।
अर्चितोऽहं त्वया भद्रे गच्छ कामं यथासुखम्।।

अपने बाल्यकाल में देखभाल करने वाली अरुंधति को राजमाता का सम्मान प्रभु राम ने ही दिया। 'अपने वनगमन में गिरिजन, जो जंगल में रहते हैं,

उनको भी संगठित एवं प्रशिक्षित कर रावण जैसे शक्तिशाली शासक को पराजित किया। प्रभु राम ने इसमें भी संदेश दिया कि सम्पूर्ण समाज के साथ चलने से ही किसी ध्येय को प्राप्त किया जा सकता है। 'रामचरितमानस' में तुलसीदास जी लिखते हैं–

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहिव्यापा।।

सब नर करहिं परस्पर प्रीति। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुतिनीति।।

श्री राम का प्रजा व समाज विषयक कथन है कि समाज मनुष्य के लिए उतना ही जरूरी है, जितना कि जीवन के लिए वायु, जल और अग्नि। मानव समाज को समाज में रहकर ही हम पूर्व साकार कर सकते हैं, इसलिए समाज जरूरी है, जिससे मनुष्य–मनुष्य बन सके, वहीं समाज का आधार परस्पर प्रेम एवं बंधुत्व का भाव होगा।

विश्वासेष्वपि साम्यं च समाजः सृष्ट एव सः।

चिन्ता स्वभावेशषैक्यं च कर्मण्येव या भवेत।।

रामराज्य की संकल्पना में राजा पालक पिता है, जिसके लिए प्रजा में किसी के भी दुःखी होने पर उसका निराकरण करना हो उसका धर्म है। अनेक वृत्तान्ता से रामराज्य की

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (प्रथम खण्ड) संस्करण (2078) गीताप्रेस गोरखपुर
2. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (द्वितीय खण्ड) संस्करण (2078) गीताप्रेस गोरखपुर
3. अध्यात्म रामायण (अनुवादक श्रीमुनिलाल गुप्त) संस्करण (2077) गीताप्रेस गोरखपुर)
4. श्रीरामचरितमानस (श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी विरचित) टीकाकार, हनुमान प्रसाद पोद्दार (गीताप्रेस गोरखपुर)
5. रामकथा का मर्म (डॉ० चन्द्रपाल शर्मा), प्रथम संस्करण (2022)
6. श्रीराम का धर्मयुद्ध (श्री राम की विजय यात्रा में वनवासियों की भूमिका) डॉ० आदित्य प्रसाद सिन्हा विकल्प प्रकाशन, दिल्ली– 110090
7. रामायण में निरनपित वाल्मीकि–दर्शन (स्वरूप विश्लेषण) डॉ० नन्दकुमार मिश्र भारती प्रकाशन (वाराणसी)

8. संस्कृत–वाङ्मय का बृहद इतिहास तृतीय–खण्ड (आर्षकाव्य) (रामायण तथा महाभारत) सम्पादक प्रो० भोलाशंकर व्यास, उत्तरप्रदेश, संस्कृत संस्थान (लखनऊ)
9. 'श्री राम संवाद' (आचार्य देवव्रत) 2014
10. रामायण के अलौकिक सन्दर्भ (डॉ० सन्तोष) शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022
11. 'सबके राम' निधि समर्पण अभियान, (डॉ० प्रवेश कुमार) (राजीव गुप्ता) प्रभात पेपरबैक्स
12. राम एवं रामायण वर्तमान संदर्भ में लेखक प्रताप नारायण खन्ना, जोधपुर, 1999
13. वाल्मीकि रामायण में राज्य : समाज एवं अर्थव्यवस्था, डॉ० भाान्ति स्वरूप, डॉ० श्री निवास मिश्र, भारत प्रकाशन अलीगढ़
14. राजा राम, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण 2065
15. वाल्मीकि रामायण में नीतितत्व (डॉ. (श्रीमती) योगेन्दी गुप्ता अनुराधा प्रकाशन, मेरठ–250002